प्रकाशन तिथि : 01 अगस्त, 2022
प्रेषण तिथि : 04 अगस्त, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 10 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संविधान ही आज की मनुस्मृति, कुरान, बाइबिल व गुरुग्रंथसाहिब: रोलसाहबसर

(जैसलमेर में श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में किसान सम्मेलन का आयोजन)

आज का यह किसान सम्मेलन देख कर के आप उल्लासित हो रहे हैं, प्रसन्न हो रहे हैं, यह शब्दों की बात नहीं, आपका चेहरा बता रहा है। मुझे ऐसा लगता है जैसे एक गांव आ कर के यहां आज बस गया है जिसमें सभी जातियों के लोग हैं और गांव में यदि कोई भी जाति नहीं रहती तो गांव में उसका अभाव खटकता है। बहुत खुशी की बात है कि सब ने इस आवश्यकता को अनुभव किया और सभी ने प्रयत्न करके इतने सारे लोगों को जुटाया। श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हुई। हमको लोगों ने चेताया कि सब को साथ लेने का प्रयत्न करना चाहिए, कोई छूटे नहीं, राजनीति भी छूटे नहीं, धन का संग्रह भी छूटे नहीं, विद्या का संग्रह भी छूटे नहीं और तब से श्री प्रताप फाउंडेशन यह काम कर रहा है। उसमें कितनी सफलता मिली यह मेरे हिसाब से कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है। गीता में भगवान ने कहा है कि कोई भी व्यक्ति बिना कर्म किए एक क्षण भी रह नहीं सकता। हम सब कर्मों में व्यस्त हैं लेकिन कैसा कर्म कर रहे हैं? गीता में बताया है कि परमेश्वर के लिए जो आराधना की जाती है वही कर्म है, बाकी सब व्यर्थ है। उसी गीता में लोकसंग्रह के लिए किया गया कर्म भी श्रेष्ठ कर्म कहा गया है। भगवान गीता के तीसरे अध्याय के 21 से 24वें श्लोक में बताते हैं कि कर्म किए बिना कोई रह नहीं सकता, मैं भी कर्म करता हूं। भगवान ने कहा कि यदि मैं सावधान होकर कर्म ना करूं तो लोग मुझे देख कर के बिगड़ सकते हैं इसलिए मुझे सदैव सावधान रहना चाहिए और मैं रहता हूं कि मैं इस प्रकार का कर्म न करने लग जाऊं जिससे लोग भ्रमित हो जाएं। इसका अर्थ यह निकलता है कि जो लोग पायनियर हैं, जो लोग अगुआ हैं, जिनकी ओर लोग देखते हैं और देखकर अपना आचरण निश्चित करते हैं उन लोगों को यह एक चुनौती है। हमारे किस आचरण से लोगों का आचरण बिगड़ सकता है, किस आचरण से सुधर सकता है, यह विशेष ध्यान रखने की बात है। कोई भगवान की साधना करता है, कोई मंदिर में माला फेरता है, कोई आरती करता है लेकिन उस सब का उद्देश्य क्या है? उद्देश्य है - लोक कल्याण, लोक संग्रह और लोक शिक्षण। जैसे आप लोगों ने लोगों को एकत्रित किया, अपनी बात समझाई, यह लोक शिक्षण ही है। जो लोगों को प्रेरित करे, ऐसा ही लोकसंग्रह होना चाहिए और ऐसा ही लोकशिक्षण होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सबको साथ लेकर चलना ही क्षत्रियत्व: संघप्रमुख श्री

क्षत्रिय का कर्तव्य है कि वह सभी की रक्षा करे और जनहित में अपना जीवन लगाए। सभी को साथ लेकर चलना ही क्षत्रियत्व है। हम सभी को अपने सामर्थ्य के अनुसार समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पण भाव के साथ योगदान देना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसी पाठशाला है जहां इस समर्पण भाव की व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। यहां युवाओं को इतिहास की सही जानकारी प्रदान की जाती है और उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जाता है। हीरक जयंती समारोह में क्षत्रिय संस्कृति, इतिहास, संस्कार और अनुशासन की झलक सभी ने देखी। समाज की इसी पहचान को हमें सुदृढ़ बनाना है। उपरोक्त संदेश माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने जोधपुर जिले के देचू गांव स्थित नागाणाराय कृषि फॉर्म पर 22 जुलाई को आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम में उपस्थित स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए दिया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मातृशक्ति उत्कर्ष सद्भाव संपर्क यात्रा का आयोजन

गुजरात के बनासकांठा प्रांत में 16 से 18 जुलाई तक तीन दिवसीय मातृशक्ति उत्कर्ष सद्भाव संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न स्थानों पर छह बैठकें आयोजित कर मातृशक्ति के साथ संवाद किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने इन बैठकों में उपस्थित मातृशक्ति को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी और कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें राजपूत कुल में जन्म मिला है। आधुनिक समय में हमें अपने कर्तव्य की याद दिलाने वाला कोई नहीं है लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें राजपूत होने का सही अर्थ बताकर हमें हमारे कर्तव्य की याद दिला रहा है। क्षत्राणी के रूप में हमारा स्वधर्म क्या है, इसे समझे बिना हम अपने परिवार में संस्कारों का सिंचन नहीं कर सकेंगे। नारी के रूप में हम अपने परिवार का केंद्र हैं और अपनी संतान में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण कर-के हम ही आज के विषैले वातावरण में एक आदर्श समाज की रचना का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बाड़मेर शहर प्रांत की कार्ययोजना बैठक संपन्न

(माननीय संरक्षक श्री का मिला सान्निध्य)

बाड़मेर शहर प्रांत की कार्ययोजना बैठक 16 जुलाई को बाड़मेर शहर में गांधीनगर स्थित मरुधर छात्रावास में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि हम जब समर्पित होकर कार्य करेंगे तब हमारा कार्य दिखेगा, हमें सदैव सतर्क रहते हुए श्री क्षत्रिय संघ का कार्य निरंतर करते जाना है। मार्ग में आने वाली विभिन्न रुकावटें हमें अपने पथ से विचलित करने का प्रयास करेंगी परंतु हमें बालक ध्रुव की तरह अपने ही कार्य में मगन रहते हुए श्रम और निष्ठा का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करना है। उन्होंने कहा कि जब तक हमारे परिवार के बच्चे इस काम को नहीं करेंगे तब तक हम अन्यों को इसके लिए प्रेरित करने के अधिकारी नहीं है। बैठक में संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चुली व प्रांत प्रमुख छगनसिंह लुणू ने सभी स्वयंसेवकों को इस सत्र में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों के लिए दायित्व सौंपे। इसमें प्रांत में लगने वाले शिविरों की व्यवस्था, शाखाएं लगाने, संघशक्ति व पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता बढ़ाने, वर्ष पर्यंत आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों जैसे महापुरुषों की जयंतिया, त्यौहारों आदि से संबंधित विभिन्न जिम्मेदारियां शामिल हैं। सभी स्वयंसेवकों को वर्ष में कम से कम एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर, एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर व एक उच्च प्रशिक्षण शिविर करने व महीने में कम से कम 10 दिन शाखा में जाने के लिए निर्देशित किया गया। कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा सहित अनेकों स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

रंगपुर (अहमदाबाद) में स्नेहमिलन व कार्यशाला संपन्न

मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद-गांधीनगर प्रांत के रंगपुर गांव में 17 जुलाई को एक दिवसीय स्नेहमिलन व कार्यशाला का आयोजन हुआ। प्रांतप्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि किस प्रकार संघ समाज के युवाओं में संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में सम्मिलित गांव के समाजबंधुओं ने भी अपने विचार रखे और समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति क्षोभ व्यक्त करते हुए संस्कार निर्माण के कार्य की आवश्यकता जताई और इस कार्य में पूर्ण सहयोग का भी आश्वासन दिया। इस दौरान शिविर की भांति उपस्थित युवाओं को पथक में बांटकर खेल, चर्चा, सहगीत आदि कार्यक्रमों के माध्यम से संघ की कार्यप्रणाली को समझाया गया। अंत में सहदेव सिंह मूली ने इन गतिविधियों के द्वारा किए जाने वाले अभ्यास में छिपे विचारदर्शन को समझाया और बताया कि आधुनिक युग में समाज का मार्गदर्शन करने के लिए संघ किस प्रकार से कार्य कर रहा है। ग्राम वासियों ने बताया कि लगभग 10 वर्ष पूर्व गांव में शाखा लगती थी लेकिन कालांतर में बंद हो गई। सभी ने उसे पुनः प्रारंभ करने की बात कही। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख अणदुभा कानेटी एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदासकाबास सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। घनश्याम सिंह और उपेन्द्र सिंह रंगपुर ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। गांव के समाजबंधुओं की मांग के अनुरूप प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने सहयोगियों सहित 23 जुलाई को रंगपुर पहुंचकर गांव में पुनः शाखा प्रारंभ की।

भावनगर में सत्संग सभा का आयोजन

गोहिलवाड़ संभाग में भावनगर शहर की शाखाओं द्वारा सामूहिक रूप से सत्संग सभा का आयोजन भक्तिनगर में 24 जुलाई को किया गया। मुक्तेश्वर महादेव मंदिर के परिसर में आयोजित इस सभा के दौरान ईश्वर भजन, प्रार्थना आदि के माध्यम से सत्संग किया गया। बालिका शाखा द्वारा भक्तिमय नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। सभा के दौरान यथार्थ गीता का वितरण भी किया गया। सभी ने मिलकर रोज रात्रि को 9 से 10 बजे तक इस प्रकार की सत्संग सभा के आयोजन का निर्णय लिया। इसमें भजन और सत्संग के साथ गीता पर चर्चा की जाएगी। भक्ति नगर में लगने वाली पुरुष शाखा, बाल शाखा एवं बालिका शाखा के स्वयंसेवकों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

सिरोही, पांचलासिद्धा एवं बोराडा में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्य विस्तार बैठकें संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के नागौर जिले की खींवसर विधानसभा की ग्राम पंचायत स्तरीय कार्य विस्तार बैठक 16 जुलाई को पांचलासिद्धा में सम्पन्न हुई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने संघ की कार्यप्रणाली के बारे में बताया। फाउंडेशन की केंद्रीय कार्य समिति के सदस्य जयसिंह सागु ने संघ के आनुषंगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन और श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में विस्तार से बताया। बैठक का संचालन जब्बरसिंह दौलतपुरा ने किया। इस दौरान संघ के नागौर प्रांत प्रमुख उगमसिंह गोकुल, गायड़ सिंह, रिड़मल सिंह, शेर सिंह, मनोहर सिंह, भंवर सिंह, रूप सिंह, कैप्टन रामसिंह, हनुमान सिंह, पांचलासिद्धा सरपंच राजेंद्र सिंह, दलपत सिंह, सुबेदार गंगा सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। इसी प्रकार 17 जुलाई को अजमेर जिले में किशनगढ़ अराई क्षेत्र की ग्राम पंचायत स्तरीय बैठक बोराडा गांव में सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य देशराज सिंह लिसाड़ीया ने फाउंडेशन की कार्यप्रणाली व इसके अंतर्गत विगत वर्षों में किए गए कार्यों की जानकारी दी। जिला समिति सदस्य गिरधर सिंह छाबड़िया ने श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में अवगत कराया। नरेंद्र सिंह डोराई ने भी अपने विचार रखे। बैठक के दौरान आगामी माह में क्षेत्र में आयोजित होने वाले श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर के बारे में भी समाजबंधुओ के साथ चर्चा की गई। इस दौरान ऊंकारसिंह देवरिया, भगवानसिंह देवरिया, विजेंद्रसिंह दांतरी, मूल सिंह दांतरी, भगवानसिंह डबरेला, दौलतसिंह धानमा, नाथूसिंह खरवड़, गोविंदसिंह देवरिया सहित स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे।

24 जुलाई को सिरोही जिले में चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत समाजबंधुओं की बैठक का आयोजन शहर स्थित महाराव सुरताण क्षत्रिय शिक्षण संस्थान में किया गया। बैठक में चिकित्सा क्षेत्र की सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई एवं उनका लाभ समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पंहुचाने हेतु योजना बनाई गयी। इस दौरान मूल सिंह सांगवाड़ा, हनवंत सिंह विरोली, सोहन सिंह चवरली, सुमेर सिंह उथमण, विक्रम सिंह जयापुरा, गोविंद सिंह भांडु, जीवनपाल सिंह सिलवनी, रविन्द्र सिंह खिरजा, शक्ति सिंह साकदडा, नटवर सिंह कुआड़ा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

नियमों के पालन से ही बनता है संगठन: संरक्षक श्री

(आलोक आश्रम में तीन दिवसीय विशेष शिविर संपन्न)

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि मैं यदि ढंग से आचरण ना करूं तो मेरे पीछे चलने वाले लोग जो मुझे देख कर अपना आचरण निश्चित करते हैं, वे पतित हो जाएंगे। इसलिए मुझे तो हरदम ही सावधान रहना पड़ता है, लेकिन वह सावधानी आप लोगों के जीवन में यदि नहीं है तो इस शिविर के बाद में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं रहनी चाहिए अन्यथा लोगों पर इसका सही प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम यहां भगवान की साधना करने के लिए नहीं आए हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षात्र धर्म की, उसके अनुकूल संस्कारों की, उसके अनुकूल चरित्र के निर्माण करने की बात है। यह सब चीजें चरित्र में आती है, लेकिन वह शिक्षा या तो पूरी मिली नहीं या उसका आचरण हुआ नहीं। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का जो लोकसंग्रह और लोकशिक्षण का काम है, उसका जो लाभ हमको और समाज को मिलना चाहिए था वह पूरा नहीं मिला है। चाहे धार्मिक संगठन हो, चाहे सामाजिक संगठन हो, चाहे राजनीतिक संगठन हो या अन्य किसी भी प्रकार का संगठन हो उसके कुछ नियम होते हैं। उन नियमों को या तो हम जानते नहीं या उनके प्रति लापरवाही के कारण यदि आचरण संघ के अनुकूल करना छोड़ दिया या भूल गए तो जो नए लोग आते हैं, वे भ्रम में पड़ेंगे। यह बड़ी खतरनाक स्थिति है। दूसरों की नकल करने का जो लाभ मिलना चाहिए था, उस लाभ की बजाय नुकसान हो जाता है। बहुत पुरानी बात ना करें, लेकिन महात्मा बुद्ध करीब 2600 साल पहले हुए, महावीर स्वामी इससे कुछ पहले हुए। वे शुद्ध रूप से अध्यात्मिक साधना करने वाले लोग थे लेकिन उन्होंने भी संगठन बनाया। उन लोगों के भी अपने नियम थे। मैंने जब उनके साहित्य का अध्ययन किया तब मुझे श्री क्षत्रिय युवक संघ में उन नियमों का पालन करने की भी प्रेरणा हुई। संगठन वह भी है, संगठन हमारा भी है लेकिन बहुत सारी चीजें हैं जो दूसरों से सीखी जानी चाहिए। जो हमारे काम की नहीं हो या कम काम की हो या हमारे लिए व्यावहारिक नहीं हो वह हम छोड़ दें तो कोई बात नहीं। महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी इनके भी एक ही संगठन होते हुए बीच में से कई संगठन होते गए। महायान, हीनयान यह बुद्ध वाले संघ में बना, जैन में भी कई बने - कोई पट्टी वाले, कोई बिना पट्टी वाले, कोई श्वेतांबर, कोई दिगंबर इनके सबके अपने

नियम है। इनमें से कौन से हमारे पर लागू होने चाहिए इसका मैंने अध्ययन किया है। आचार्य तुलसी जैनों में हुए, तन सिंह जी भी उनसे मिले थे। वह दो तरह की शिक्षा देते थे एक साधुओं के लिए, एक गैर साधुओं के लिए। क्योंकि जो साधु नहीं है वह साधुओं के नियम का पालन नहीं कर पाएंगे। लेकिन उनके लिए भी कुछ तो नियम होना चाहिए जिनका उनको पालन करना चाहिए। आचार्य तुलसी से मैं भी मिला हूं। उनसे श्री क्षत्रिय युवक संघ की, तन सिंह जी की बात की। क्षात्र धर्म सबके पालन की बात करता है, स्वधर्म की बात करता है, लोगों को रास्ता दिखाना, लोगों की रक्षा करना यह सब बातें उनको अच्छी लगी। फिर आचार्य तुलसी ने कहा कि आप लोग श्रेष्ठ मार्ग पर चल रहे हैं। उनके बाद महाप्रज्ञ हुए जिनके भी मैं काफी निकट रहा। मैं साथियों को लेकर उनके पास जाता था और संघ की बात करता था यह उनको अच्छा लगता था। यह सब बातें मैं इसलिए कह रहा हूं कि नियम का पालन होना चाहिए। कुछ नियमों को आप जानते हैं लेकिन लापरवाही के कारण अपने जीवन में उनको उतार नहीं पाते। बहुत छोटी छोटी बातें शिविर में आपको बताई गई है, मैं चाहता हूं कि इन छोटी-छोटी बातों का आप इस शिविर में पूरा पालन करें। महात्मा बुद्ध के समय में एकरूपता के लिए उनके सभी भिक्षुओं के वस्त्र एक समान होते थे। कपड़े को कैसे बदलना चाहिए, कैसे चलना चाहिए, चलते समय किस प्रकार हाथ मिलाने चाहिए, इतनी गहराई से वह अपने शिष्यों को शिक्षण देते थे। उपरोक्त बातें श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने आलोक आश्रम बाड़मेर में आयोजित हुए विशेष शिविर में उपस्थित शिविरार्थियों से कही।

उन्होंने कहा कि आयुवान सिंह जी जब संघप्रमुख बने तो तनसिंह जी संचालन प्रमुख थे। उन्होंने कहीं लिखा है कि मैं कभी आयुवान सिंह जी के आगे नहीं चला, आयुवान सिंह जी के दाहिनी तरफ नहीं चला, बाई तरफ ही चला। वनवास में जब श्रीराम गए तो सबसे आगे श्रीराम चलते थे, पीछे सीता जी और उनके पीछे लक्ष्मण चलते थे। तब सीता जी यह ध्यान रखती थी कि श्री राम के के चरणों के निशान पर उनके कदम ना पड़े और लक्ष्मण यह ध्यान रखते थे कि उन दोनों के चरणों पर उनका कदम नहीं पड़ना चाहिए। आजकल लोग कहते हैं कि यह सब चोंचले हैं, लेकिन ये चोंचले नहीं है। जैसे पहले अपने पिताजी के सामने कोई पलंग पर नहीं बैठता था, बड़ा भाई बैठा है तो पलंग पर नहीं बैठेंगे और यदि बैठने की किसी वजह से आवश्यकता भी पड़ जाए तो सिरहाने की तरफ नहीं बैठेंगे, यह अनटोल्ड नियम थे। भगवान कृष्ण को बुलाने के लिए, युद्ध में शामिल करने के लिए अर्जुन और दुर्योधन दोनों गए थे। दुर्योधन पहले गया और भगवान के सिरहाने जाकर बैठ गया। अर्जुन आया तो वह पैरों की ओर नीचे बैठा कि जब जागेंगे तो प्रणाम करूंगा। उनके जागते ही प्रणाम किया और कृष्ण ने अर्जुन को अपनी शरण में रख लिया और उसका परिणाम हम सब जानते हैं। यह कुछ ऐसे नियम थे जो कहीं लिखे हुए नहीं थे। भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं ना कुछ छोड़ना है, ना कुछ नया ग्रहण करना है, सहज रूप से जो हो जाए वह करने के लिए एक बार ठोस कदम उठाना पड़ता है। आप लोग संघ के नियमों का पालन करते हुए संघप्रमुख के साथ काम करें और इसी प्रकार से आपके पीछे लेयर बनती जाएगी, पीछे नए काम करने वाले तैयार होते जाएंगे। जैसा इस शिविर में कहा जाए वैसा आपको करना है। 27 से 29 जुलाई तक संपन्न इस तीन दिवसीय शिविर में 70 शिविरार्थियों ने भाग लिया। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने शिविर का संचालन किया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

तनेराज शाखा मुम्बई के स्वयंसेवक

श्री कल्याणसिंह जी सुरावा

के सुपुत्र रविंद्रसिंह

को सीबीएसई बोर्ड 12वीं (वाणिज्य वर्ग) परीक्षा में 91.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु...

गोपालसिंह सुरावा

भानुप्रतापसिंह सुरावा

श्रीपालसिंह सुरावा

समन्दरसिंह बालियाना

जसवंतसिंह नागाणी

जालमसिंह मिठौड़ा

नाथूसिंह काठाड़ी

नेपालसिंह गोळा

वागसिंह लोहिड़ी

देवीसिंह झलोड़ा

एवं समस्त स्वयंसेवक तनेराज शाखा मुम्बई।

संपादकीय

समाज के लिए मीठा विष -व्यक्ति के महिमामंडन की प्रवृत्ति

पूज्य श्री तन सिंह जी ने समाज को एक जीवित और चेतन हस्ती बताया है। इस दृष्टिकोण से एक व्यक्ति के रूप में हम समाज को जितना प्रभावित करते हैं उससे कहीं अधिक समाज द्वारा हम प्रभावित होते हैं, क्योंकि समाज कहीं अधिक विराट एवं शक्तिशाली सत्ता है इसलिए उसका प्रभाव भी अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण होता है। किंतु समाज का निर्माण भी व्यक्तियों द्वारा ही होता है इसलिए एक व्यक्ति के क्रियाकलाप भले ही समाज पर बहुत अधिक प्रभाव ना डालते हों लेकिन जब ऐसे क्रियाकलाप समाज के अधिकांश व्यक्तियों में एक प्रवृत्ति के रूप में फैलने लगे तो यह प्रवृत्ति सामाजिक जीवन को प्रभावित करने में भी समर्थ हो जाती है। इसलिए समाज में रहकर व्यवहार करते समय हमारे भीतर यह चिंतन अवश्य होना चाहिए कि हमारे कौनसे क्रियाकलाप समाज में किस प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हैं और उनका क्या प्रभाव समाज पर पड़ रहा है? व्यक्ति के रूप में हमारे भीतर अनेक मूल प्रवृत्तियां होती हैं जिनसे प्रेरित होकर हम विभिन्न क्रियाकलाप करते हैं। ऐसी ही एक मूल प्रवृत्ति आत्मप्रदर्शन की है जिससे प्रेरित होकर हम अपने आप को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करते हैं। यह अभिव्यक्ति अनेक रूपों में होती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम विभिन्न कर्म करते हुए अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ भी हम जो संवाद और प्रतिक्रियाएं आदि करते हैं उनके माध्यम से भी हम अभिव्यक्त होते हैं और ये अभिव्यक्तियां सामाजिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित करती हैं और ऐसी ही एक अभिव्यक्ति विभिन्न उपलब्धियों पर अथवा अवसरों पर व्यक्ति रूप में किसी का महिमामंडन करने का है। समाज के किसी व्यक्ति द्वारा किसी क्षेत्र में कोई विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने पर उस व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से विशिष्ट व महान घोषित करने की जो प्रवृत्ति समाज में बढ़ती हुई दिखाई दे रही है वह निश्चित रूप से एक मीठे विष की भांति है और अपनी इस मिठास के कारण समाज में व्यापक रूप से प्रसारित होकर हानि पहुंचाने की भी क्षमता रखती है, इसलिए इस प्रवृत्ति को पहचानना और इसके निवारण का उपाय करना आवश्यक है।

आज हम अपने आसपास देखें तो किसी भी व्यक्ति की किसी भी भौतिक उपलब्धि पर सार्वजनिक रूप से उसका महिमामंडन करने की प्रवृत्ति सभी ओर पांव पसारती दिखाई देगी। चाहे किसी का प्रतियोगी परीक्षा में चयन हो अथवा किसी के जन्मदिन का अवसर हो, किसी के द्वारा लिखी गई कोई काव्यात्मक रचना हो या कोई समसामयिक आलेख हो, किसी ने व्यवसायिक उपलब्धि प्राप्त की हो या किसी खेल में विशेष प्रदर्शन करने वाला कोई खिलाड़ी हो, इन सभी अवसरों पर सामान्य बधाई अथवा प्रोत्साहन से आगे बढ़कर हम व्यक्ति के रूप में उसकी उपलब्धियों को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करने लगते हैं। सोशल मीडिया आदि माध्यमों पर तो यह प्रवृत्ति बढ़ ही रही है, साथ ही समाज में भी समारोह आयोजित करके ऐसे व्यक्तियों को साफा पहनाकर, माल्यार्पण करके उन्हें अति विशिष्ट बनाने के आयोजन हो रहे हैं। यदि किसी ने प्रतियोगी परीक्षा पास करके अधिकारी का पद प्राप्त किया हो अथवा किसी ने छात्रसंघ, सरपंच, विधायक आदि किसी चुनाव में सफलता प्राप्त की हो अथवा किसी व्यवसायी ने समाजसेवा के कार्य के लिए कोई धनराशि दान दी हो, समाज के एक वर्ग द्वारा ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहन एवं संयमित प्रशंसा से आगे बढ़कर उन पर विशिष्टता आरोपित करने का उपक्रम प्रारंभ कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया के दो स्वाभाविक परिणाम होते हैं - पहला उस व्यक्ति में अपने आप के लिए विशिष्टता का भाव जगने लगता है और स्वयं को वह समाज के अन्य व्यक्तियों से अधिक महत्वपूर्ण और अलग मानने लगता है। उसका यह भाव उसकी स्वयं की प्रगति में तो बाधक है ही, उस व्यक्ति के समाज के लिए उपयोगी होने में भी उसका यह अहंभाव बाधक बनता है। इस प्रकार के अहंभाव से ग्रसित व्यक्तियों के क्रियाकलाप और उनकी विशिष्टता वाली छवि समाज में व्यक्तिवाद की भावना को पुष्ट करती है और धीरे-धीरे समाज को विखंडन की ओर बढ़ाती है। दूसरा परिणाम यह होता है कि समाज का सामान्य युवा उस व्यक्ति को विशिष्ट मानकर उससे एक दूरी अनुभव करता है और उसको अपने समान मानकर उसी की भांति आगे बढ़ने की प्रेरणा नहीं ग्रहण कर पाता। जब तक समाज के सामान्य युवा को यह अनुभव ना हो कि इन उपलब्धियों को प्राप्त करने वाला भी उसी की भांति एक साधारण व्यक्ति है और अपने श्रम व निष्ठा से जिस प्रकार उसने यह उपलब्धि हासिल की है उसी प्रकार वह भी कर सकता है, तब तक वह उससे प्रेरणा प्राप्त नहीं कर सकता। समाज के व्यक्तियों द्वारा इस प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करने पर उन्हें विशिष्ट बना देने के इस उपक्रम का ही परिणाम आगे चलकर हम देखते हैं कि राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में समाज के जो भी व्यक्ति आगे बढ़ जाते हैं उनमें सामाजिक भाव कम और व्यक्तिगत अहंकार व स्वार्थ अधिक दिखाई देता है जिसकी शिकायत करते हुए अक्सर समाजबंधु दिखाई देते हैं। किंतु हम यह भूल जाते हैं कि उनमें इस विशिष्टता का आरोपण हमने ही उनके महिमामंडन की प्रक्रिया द्वारा प्रारंभ किया था। यह विडंबना ही है कि समाज के सामान्य व्यक्ति अक्सर यह पीड़ा प्रकट करते हैं कि समाज का अभिजात्य वर्ग समाज के लिए संवेदनशील नहीं है, समाज का अपेक्षित सहयोग नहीं कर रहा है या समाज की आवश्यकता और समस्याओं को ठीक प्रकार से नहीं समझता है लेकिन वे ही समाज बंधु समाज में किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति को विशिष्ट घोषित करने और उसे अभिजात्य संस्कृति की ओर धकेलने में पूरा योगदान देते हुए दिखाई देते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहन नहीं दिया जाए अथवा उनकी प्रशंसा नहीं की जाए। अवश्य ऐसा किया जाना चाहिए लेकिन समाज के साथ उनका संबंध विशिष्ट और सामान्य का नहीं बल्कि पारिवारिक भाव से परिपूर्ण होना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम प्रोत्साहन और महिमामंडन में अंतर समझते हुए यह सावधानी रखें कि हम किसी पर विशिष्टता आरोपित कर उसे अहंवादी बनाने और समाज में व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में सहयोगी न बनें बल्कि उन्हें यह अनुभव कराएं कि वह भी समाज रूपी इसी परिवार के अंग हैं और जो उपलब्धि उन्होंने प्राप्त की है उससे समाज के प्रति उनका दायित्व और भी बढ़ गया है। इससे उनसे प्रेरणा प्राप्त करने वाले समाज के युवाओं में भी विशिष्टता के प्रति मोह पनपने की बजाय सामाजिक भाव और कर्तव्य बुद्धि का जागरण होगा।

श्री क्षत्रिय युवक संघ अहंभावी व्यक्तिवाद को समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा मानता है इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण की पूरी प्रक्रिया में सबसे अधिक महत्व व्यक्ति के अहं को गला कर उसे एक सामाजिक इकाई के रूप में तैयार करने पर दिया जाता है। प्रशंसा पाने की चाह बालपन की अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था में तो आगे बढ़ने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कुछ सीमा तक काम देती है किंतु उत्तरोत्तर श्रेष्ठता और परिपक्वता की ओर बढ़ने पर जीवन के विकट कर्मक्षेत्र में तो वह शुद्ध कर्तव्यबुद्धि ही मार्ग दिखा सकती है जो प्रशंसा और आलोचना से परे होती है। इसलिए हम सबका दायित्व बनता है कि हम अपने साथियों द्वारा जीवन के किसी क्षेत्र में कोई उपलब्धि प्राप्त करने पर अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा द्वारा उनके अहंभाव को पुष्ट करने की अपेक्षा समाजबंधुओं में उस शुद्ध कर्तव्यबुद्धि के निर्माण का प्रयत्न करें जिससे हमारे द्वारा प्राप्त की जाने वाली सभी उपलब्धियां व्यक्ति के रूप में हमारी विशिष्टता की द्योतक ना बनकर सामाजिक प्रगति को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण बने। श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली ऐसे ही शुद्ध कर्तव्यबुद्धि से प्रेरित युवाओं के निर्माण की प्रक्रिया है।

झांझमेर और विसामण (गुजरात) में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग में 16 से 18 जुलाई की अवधि में दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ। मोरचंद प्रांत में झांझमेर गांव स्थित नागणेची माता मंदिर परिसर में आयोजित तीन दिवसीय शिविर का संचालन प्रांतप्रमुख राजेंद्रसिंह मोरचंद ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ स्वयं के निर्माण की बात करता है। स्वयं को श्रेष्ठ बनाकर ही हम समाज और राष्ट्र को भी श्रेष्ठ बनाने में सहयोग कर सकते हैं। इस तीन दिवसीय शिविर के रूप में हमें वह अनूठा अवसर मिला है जिसमें हम अपने भीतर श्रेष्ठ गुणों को स्थापित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ कर सकते हैं। इसलिए सावधान और सजग रहकर इस अवसर का लाभ उठाएं। शिविर में झांझमेर, मधुवन, रोजिया, खंढेरा, मोरचंद, खडसलिया, अवाणिया, वाटलिया, दाठा, सांगाणा, कामरोल, तलाजा आदि गांवों के 106 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 17 जुलाई को शिविर स्थल पर एक स्नेहमिलन भी आयोजित किया गया जिसमें आसपास के गांवों के समाजबंधुओं ने भाग लिया एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम के दौरान सामूहिक यज्ञ एवं स्नेहभोज का भी आयोजन हुआ। नागणेची माता मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन जयपाल सिंह राठौड़ ने तलाजा क्षेत्र में संघ कार्य के अधिकाधिक प्रसार की बात कही।

विसामण

झांझमेर

वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह आंबली भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। इसी प्रकार हालार प्रांत के विसामण गांव में भी इसी अवधि में तीन दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। भागीरथ सिंह सांढखाखरा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि वर्तमान समय में संगठन ही सबसे बड़ी शक्ति है। हम संगठित होकर कार्य करेंगे तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में सच्चे संगठन का निर्माण कर रहा है और उसी के लिए इस प्रकार के शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में चनोल, हड़मतियां, खाखरा बेला, विसामण, मकाजी मेघपर, नेकनाम आदि गांवों के 85 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभागप्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.08.2022 से 21.08.2022 तक	**जोधियासी**। नागौर से बसें उपलब्ध।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.08.2022 से 14.08.2022 तक	**भोपालगढ़ (जोधपुर)**। जोधपुर से बसें उपलब्ध।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.08.2022 से 14.08.2022 तक	**सुरपुरा (कल्याणपुर) (बाड़मेर)**। बाड़मेर व जोधपुर से कल्याणपुरा से सुरपुरा। **सम्पर्क:** 80949-68445
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	11.08.2022 से 14.08.2022 तक	**बेलवा राणजी (जोधपुर)**। बालेसर-तिंवरी रोड़ पर।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2022 से 16.08.2022 तक	दादा भगवान मंदिर, कामरेज चार रास्ता **सूरत**।
06.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2022 से 15.08.2022 तक	**भोपानी (मुंबई)**। पालाघर से विक्रमगढ़ सड़क मार्ग। **(पालाघर)**
07.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2022 से 15.08.2022 तक	**आणंद (गुजरात)**। इंटरनेशनल स्कूल मोगरा।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2022 से 15.08.2022 तक	**कमाणा (गुजरात)**। गांव में।
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.08.2022 से 16.08.2022 तक	**भगोड़ी (गुजरात)**। गांधी नगर।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.08.2022 से 16.08.2022 तक	**काणेटी (गुजरात)** प्राथमिक शाला
11.	बाल शिविर	13.08.2022 से 14.08.2022 तक	**जालोर शहर** **सम्पर्क:** 94148-82535
12.	बाल शिविर	13.08.2022 से 14.08.2022 तक	**पाली शहर** **सम्पर्क:** 94148-82535
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	18.08.2022 से 21.08.2022 तक	**बामणिया (चूरू)**। सुजानगढ़, सालासर से बसें।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	18.08.2022 से 21.08.2022 तक	**बावतरा (जालोर)**। कैवाय माताजी मंदिर। सायला-सिणधरी मार्ग पर। बस सुविधा उपलब्ध है। **सम्पर्क:** 97848-88131, 94146-33438
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	18.08.2022 से 21.08.2022 तक	**सरवाड़ (अजमेर)**। **सम्पर्क:** 9680307647, 99288-23123
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	18.08.2022 से 21.08.2022 तक	**आटी (बाड़मेर)**। बाड़मेर से बालेरा मार्ग पर आटी।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	18.08.2022 से 21.08.2022 तक	**सोढ़ो की ढाणी (बाड़मेर)**। सुंदाबेरी। धोरीमन्ना से सांचौर मार्ग पर।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.08.2022 से 22.08.2022 तक	संस्कार विद्या संकुल, बलेश्वर पाटिया पलासना, **सूरत**।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2022 से 29.08.2022 तक	**विरोला (गुजरात)**। तहसील दांतीवाड़ा।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	30.08.2022 से 01.09.2022 तक	**डेल (गुजरात)**। बनासकांठा, तहसील-थराद।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

गजेन्द्रसिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

निवाई (टोंक) में वृक्षारोपण कार्यक्रम

टोंक जिले में निवाई बाईपास स्थित मीराबाई बालिका छात्रावास में 22 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा तहसीलदार प्रांजल कंवर एवं भामाशाह दीपेंद्र सिंह पथराज की उपस्थिति में वृक्षारोपण किया गया जिसमें वृक्षों के हमारे जीवन में महत्व को बताते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। संघ के स्वयंसेवक तेज भंवर सिंह नटवाड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे एवं वृक्षारोपण के कार्य में सहयोग किया।

नरेश सिंह शेखावत बने उच्च न्यायालय में न्यायाधीश

हरियाणा सरकार में सीनियर एडवोकेट जनरल नरेश सिंह शेखावत को सुप्रीम कोर्ट के कॉलेजियम द्वारा पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। नरेश सिंह जिला महेंद्रगढ़ के गांव जवाहर नगर मलकपुरीया के मूल निवासी हैं और 1948 में भारत-पाक युद्ध में शहीद हुए उमराव सिंह के भतीजे हैं। नरेश सिंह शेखावत पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय से सीनियर एडवोकेट की मानद उपाधि प्राप्त करने वाले पहले राजपूत भी हैं।

प्रोफेसर सारंगदेवोत लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रोफेसर एस एस सारंगदेवोत को यूनिवर्सिटी मलेशिया केलंतन और डीएचएस फाउंडेशन द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। शिक्षा में नवीन पद्धतियों और नवाचारों का अन्वेषण कर उनके संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान हेतु उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रोफेसर सारंगदेवोत भारतीय सामाजिक विज्ञान परिषद में सलाहकार है तथा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद की विजिटिंग टीम के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

संघशक्ति में शिविर संचालकों की एकदिवसीय कार्यशाला संपन्न

जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में 17 जुलाई 2022 को शिविर संचालकों की एक दिवसीय कार्यशाला माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सानिध्य में संपन्न हुई। केंद्रीय कार्यकारी (शिविर एवं शिविर शिक्षण) गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर संचालन की प्रक्रिया और उसमें ध्यान रखे जाने योग्य बातों की विस्तृत जानकारी दी। शिविर स्थल का चयन करने के मापदंड क्या होने चाहिए, ध्वज लगाने का स्थान कैसा हो व उसकी क्या मयार्दाएं हों, घट वितरण किस आधार पर किया जाना चाहिए, पथक वितरण के समय शारीरिक क्षमताएं, कद, आयु आदि को ध्यान में रखना, स्वागत और विदाई संदेश में ध्यान रखने योग्य बातें, भोजन, स्नान, निवृति आदि की व्यवस्था का निरीक्षण आदि के संबंध में आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान किए गए। प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर, माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं उच्च प्रशिक्षण शिविर में शिक्षण के स्तर पर भी चर्चा हुई। माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि इस सत्र में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाए कि शिविर में आने वाले प्रत्येक शिविरार्थी को शाखा से अवश्य जोड़ा जाए जिससे उसके जीवन में श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिक्षण को निरंतरता प्रदान की जा सके, साथ ही शाखा में आने वाले प्रत्येक स्वयंसेवक को शिविर में लाकर उच्चतर शिक्षण भी अवश्य प्रदान किया जाए। बैठक में बीकानेर, शेखावाटी, नागौर, जयपुर और पूर्वी राजस्थान संभाग में शिविरों का संचालन करने वाले स्वयं सेवक सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ एक का शेष)

सबको साथ...

वरिष्ठ स्वयंसेवक चैन सिंह बैठवास, देवराज समाज के उपाध्यक्ष विजय सिंह लोड़ता, गौशाला के अध्यक्ष कान सिंह देचू, देचू सरपंच भवानी सिंह, सेतरावा सरपंच गोपाल सिंह, सरपंच भोम सिंह पंवार, पूर्व प्रधान उम्मेद सिंह, भाजपा युवा प्रदेश उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह बुड़किया, छैलू सिंह आमला, कुंभ सिंह देचू, अगर सिंह देचू, भंवर सिंह सहित अनेकों समाज बंधु इस दौरान उपस्थित रहे। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा एवं संभागप्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

मातृशक्ति...

मातृशक्ति जब तक अपनी क्षमताओं को पहचान कर समाज हित में उनका सदुपयोग नहीं करेगी तब तक समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता। एक माता सौ शिक्षकों से बढ़कर होती है, इसलिए अपने महत्व को और अपने दायित्व को समझ कर हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से स्वयं को संस्कारित करना है और उन संस्कारों को समाज की अगली पीढ़ी को देना है। ऐसा होने पर ही पूज्य श्री तन सिंह जी का सपना साकार होगा। उर्मिला बा पच्छेगाम एवं निशा बा लिबोणी भी इन बैठकों में उपस्थित रहीं। प्रथम बैठक 16 जुलाई को प्रातः 11:00 बजे दांतीवाड़ा तहसील के पांसवाल ग्राम स्थित गंगेश्वर महादेव मंदिर के परिसर में आयोजित हुई। बैठक में 400 से अधिक महिलाएं उपस्थित रहीं जिन्हें नारीधर्म और क्षत्राणी के रूप में उनके कर्त्तव्यों के संबंध में बताया गया। 150 समाजबंधु भी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे जिन्हें प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, भीमसिंह लिबोणी व ईश्वर सिंह आरखी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के संबंध में जानकारी प्रदान की। सुजान सिंह पांथावाड़ा ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी दिन धानेरा तहसील के चारड़ा स्थित वांकल मंदिर में भी दिन में 3:00 से 5:00 बजे तक मातृशक्ति की बैठक का आयोजन हुआ। मंडल प्रमुख शैतान सिंह चारड़ा ने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। पुरुष साथियों के साथ बैठक में प्रांत प्रमुख अजीत सिंह ने मंडल में हो रहे संघ कार्य के संबंध में जानकारी दी। 17 जुलाई को थराद तहसील के पीलूड़ा गांव स्थित शैक्षणिक संकुल में प्रातः 10 से 12 बजे तक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें थराद, वाव, सुईगाम आदि स्थानों से महिलाएं उपस्थित रहीं। सिद्ध राज सिंह पीलूड़ा, अरविंद सिंह नारोली, शैल सिंह वलादर एवं भगवान सिंह वलादर ने व्यवस्था में सहयोग किया। 400 से अधिक महिलाएं एवं 100 से अधिक समाजबंधु बैठक में उपस्थित रहे। सभी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर एवं शाखाओं में अपने परिवार की बालिकाओं को भेजने पर सहमति जताई। इसी दिन रूलुचि गांव स्थित आशापुरा मंदिर में भी बैठक आयोजित हुई जिसमें 200 से अधिक महिलाएं एवं बालिकाएं उपस्थित रहीं। थान सिंह लोरवाडा एवं महेंद्र सिंह बुकणा ने व्यवस्था में सहयोग किया। पुरुष साथियों की बैठक में गुमान सिंह माडका एवं राणा गजेंद्र सिंह वाव ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को समाज के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए सभी से सहयोग करने की बात कही। 18 जुलाई को वडगाम में केशवधाम में मेगोल चौकड़ी पर बैठक का आयोजन किया गया। यहां भी 200 से अधिक बालिकाएं एवं महिलाएं सम्मिलित हुई। पुरुष बैठक में राम सिंह धोता सकलाणा, मदार सिंह मेगोल, केसरी सिंह पेपोल, भीम सिंह लिबोणी आदि ने अपने विचार रखे। इसी दिन वडगाम में स्थित सरस्वती उच्च माध्यमिक बालिका पाठशाला में भी बैठक आयोजित हुई जिसमें आठवीं से बारहवीं कक्षा तक की 145 बालिकाओं ने भाग लिया। सभी स्थानों पर पुरुषों की अलग बैठकें आयोजित हुई जिनमें प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में बताया गया। इन बैठकों से पूर्व विभिन्न गांवों में संपर्क भी किया गया। 12 जुलाई को पांथावाड़ा में तथा 13 जुलाई को ताखुवा, शेराऊ, नारोली, वाघासण, सवराखा एवं करबुण गाँवों में संपर्क करके मातृशक्ति एवं समाजबंधुओं को बैठक में आने का निमंत्रण दिया गया।

जयपुर संभाग में एक दिवसीय पारिवारिक भ्रमण कार्यक्रम संपन्न

19 जुलाई को जयपुर सम्भाग के स्वयंसेवकों का एक दिवसीय पारिवारिक भ्रमण कार्यक्रम जयपुर से बीसलपुर के लिये रखा गया। केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ व सम्भाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर के साथ प्रातः 7 बजे सभी स्वयंसेवक व उनके परिजन संघशक्ति भवन (जयपुर) से दो बसों द्वारा रवाना हुए एवं सर्वप्रथम डिग्गी कल्याण जी पहुंचकर दर्शन किये। तत्पश्चात डिग्गी गढ़ में लग चुके प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर स्थल के सभी लोगों ने दर्शन किये। यहां डिग्गी गढ़ परिवार द्वारा सभी के लिये अल्पाहार की व्यवस्था की गई। सभी ने गढ़ में स्थित रानी महल, घोड़ा नाल, महाराणा कुम्भा का उपचार स्थल, बारूद घर इत्यादि ऐतिहासिक स्थलों और डिग्गीपोखर का भ्रमण किया। इसके बाद बीसलपुर जल उपचार संयंत्र (Water Treatment Plant) का एक शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम रखा गया। अधीक्षक अभियंता भवानी सिंह जाखल एवं संयंत्र के तकनीकी अभियंताओं द्वारा सभी को जल शुद्धिकरण की प्रक्रिया की जानकारी उपलब्ध करवाई गई और बताया कि प्रतिदिन लगभग 60 करोड़ लीटर जल जयपुर के लिये शुद्ध किया जाता है। यहां से सभी ने बीसलपुर देव मन्दिर पहुंच कर दर्शन किये एवं बीसलपुर बांध का भ्रमण किया। अंत में राजमहल स्थित जल उपचार संयंत्र का भ्रमण किया गया और सभी पुनः जयपुर के लिये रवाना हुए। जयपुर से पूर्व बस्सी के पास राजपूत बालिका छात्रावास में स्थानीय लोगों द्वारा जलपान की व्यवस्था रखी गई। तेज भंवर सिंह नटवाड़ा, देवराज सिंह ने व्यवस्था में सहयोग किया। इस दौरान स्थानीय बालकों के लिये प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भी तय किया गया।

प्रताप सिंह, चक्रवर्ती सिंह एवं करण सिंह का कॉलेज सहायक आचार्य परीक्षा में चयन

राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित कॉलेज सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) परीक्षा में जोधपुर स्थित सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय के शोधार्थी चोरड़िया निवासी प्रताप सिंह राठौड़ ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी विश्वविद्यालय के शोधार्थी इंद्रोका निवासी चक्रवर्ती सिंह खींची ने परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आलोक त्रिपाठी द्वारा दोनों शोधार्थियों को सम्मानित किया गया। रूपसी गांव के करण सिंह भाटी ने भी इस परीक्षा में सोलहवां स्थान प्राप्त किया है। तीनों युवाओं ने अपनी इस सफलता से ग्रामवासियों व समाजबंधुओं को गौरवान्वित किया है।

निशा कंवर ने अंतरराष्ट्रीय शूटिंग वर्ल्ड कप चैंपियनशिप में जीता कांस्य पदक

सीकर जिले के महरौली गांव की निवासी निशा कंवर ने 17 जुलाई को जर्मनी के म्यूनिख में आयोजित हुई अंतरराष्ट्रीय पैरा शूटिंग वर्ल्ड कप चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता। उन्होंने 10 मीटर एयर राइफल एस एच -1 इवेंट में यह सफलता प्राप्त की। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त करके उन्होंने ग्रामवासियों एवं समाजबंधुओं को गौरवान्वित किया है।

किसान सम्मेलन हेतु तैयारी बैठकें

जैसलमेर में 24 जुलाई को आयोजित किसान सम्मेलन की पूर्व तैयारी हेतु 10 जुलाई को पोस्टर विमोचन के बाद जिले भर में विभिन्न स्थानों पर बैठकें आयोजित कर संपर्क किया गया। 13 जुलाई को सोढाण क्षेत्र के ख्याला मठ म्याजलार में मठाधीश गुरु गोरखनाथ जी के आशीर्वाद के साथ बैठक सम्पन्न हुई। 15 जुलाई को मोहनगढ में व 16 जुलाई को फलसूंड, भणियाणा एवं रामगढ़ के जियादेसर मंदिर प्रांगण में जनसंपर्क बैठकें सम्पन्न हुई। 17 जुलाई को नोख, नाचना, देगराय मन्दिर रासला और मल्लीनाथ मंदिर साकड़ा में बैठकों का आयोजन किया गया। 18 जुलाई को बसियां क्षेत्र की बैठक माँ जोगीदास धाम स्थित मंदिर परिसर में, रामगढ़ क्षेत्र की बैठक तनोटवास और किशनगढ़ में तथा गोगलियाटी क्षेत्र में कोटड़ी, मदा व सोडा इत्यादि गांवों में जनसंपर्क किया गया। 19 जुलाई को पोकरण स्थित श्री दयाल सैनिक राजपूत छात्रावास में सर्वसमाज की बैठक का आयोजन किया गया। 20 जुलाई को संघ कार्यालय तनाश्रम में बैठक का आयोजन किया गया। 22 जुलाई को जैसलमेर शहर में वाहन रैली का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों की संख्या में सर्वसमाज के लोग अपने वाहनों के साथ रैली में शामिल हुए। बडोड़ा गांव में भी इसी दिन बैठक सम्पन्न हुई। संभागप्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली सहयोगियों सहित विभिन्न बैठकों में उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष) संविधान ही आज की मनुस्मृति, कुरान, बाइबिल व गुरुग्रंथसाहिबः रोलसाहबसर

यह भूमि भगवान कृष्ण के वंशजों की है, इसलिए विशेष ध्यान देने की बात है कि आप लोग मिलकर, चाहे आप किसी भी जाति के हों, आपस में बैठ के दंगे फसाद को रोकने का प्रयास करें, उस को बढ़ावा ना दें। अभी श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती मनाई गई थी, उसमें महावीर सिंह जी द्वारा सामाजिक समरसता का संदेश दिया गया था। उस संदेश का बहुत प्रभाव पड़ा और जगह-जगह से यह समाचार आने लगे कि यह बात कोई क्षत्रिय ही कह सकता है। जो ऐसे कर्म करता है वह क्षत्रिय है। मेरी परिभाषा तो ऐसी है कि आप सब क्षत्रिय है। सब में वह सत्व है, सब में राजसिक वृत्ति भी है, सब में तामसिक वृत्ति भी है उसको पहचानने की आवश्यकता है। हम एकत्रित हों, एक बनें, यह बहुत आवश्यक है लेकिन यह इससे भी अधिक आवश्यक हैं कि हम नेक बनें। जिसका आचरण श्रेष्ठ नहीं है और वह यदि भाषण देकर के लोगों को प्रेरित करना चाहता है तो वह संभव नहीं है क्योंकि लोग हमारे आचरण को देखते हैं। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के सरंक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने जैसलमेर स्थित जवाहिर राजपूत छात्रावास में श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में 24 जुलाई को आयोजित किसान सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हम सभी कृषक हैं। भारत का अधिकांश हिस्सा गांव में रहता है और गांव में सब खेती करते हैं तो जो खेती करते हैं या जमीन पर निर्भर हैं, वे सब कृषक हैं। इसलिए हमारे अंदर जो सात्विक भाव है उसको उजागर करने की आवश्यकता है, उसको कोई दूसरा जागृत नहीं कर सकता, उसको हमको ही जागृत करना है और एक एक कड़ी से मिल कर के यह संगठन बन सकता है, यह बनते हुए हमने देखा है। यह केवल बाड़मेर और जैसलमेर की बात नहीं है, पूरे देश के कृषकों को जागृत करना है, तब कोई ताकत बनेगी। आज जैसलमेर में कर रहे हैं, कल बाड़मेर में किया था, एक दिन जयपुर में कर लेंगे तो एक दिन दिल्ली में भी कार्यक्रम होगा। लेकिन केवल भीड़ से काम बनने वाला नहीं है जब तक कि सात्विक भावना ना हो। इस भावना को प्रेरित करने, जागृत करने, उसको समायोजित करने के हमारे संविधान ने अधिकार दिए हैं। संविधान को हम ध्यान में रखकर के कार्य करें। यही हमारी मनुस्मृति है, हमारी बाइबिल है, यही हमारी कुरान है, यही हमारा गुरु ग्रंथ साहिब है। आज के इस युग में संविधान के विरुद्ध जाकर के यदि कोई काम करेंगे तो निश्चित रूप से सिर-फुटौव्वल होगी, विवाद बढ़ेगा और जो हम एकता का प्रयत्न कर रहे हैं, वह कड़ी टूट जाएगी। इस कड़ी को टूटने नहीं देना है और मैं पूरा विश्वास करता हूं कि आप इस में सक्षम है और आप यह कर सकेंगे।

श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सब मिलकर बंधुभाव से आगे बढ़ें। हमारी मांगे कभी पूरी हों, आज ना हों, कल हों या परसों हो, अगर शक्ति होगी तो वे अवश्य पूरी हो जाएंगी लेकिन कम से कम इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठकर चिंतन करना, विचार करना हम प्रारंभ कर दें तो हमारे गांव का वातावरण सुधर जाएगा, हमारे कस्बों का, हमारे जिलों का ही नहीं, हमारे राज्य का ही नहीं, पूरे देश का वातावरण सुधर जाएगा। हम उस वातावरण को सुधारें, श्री क्षत्रिय युवक संघ हमको यही प्रेरणा देता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में क्षात्र धर्म की बात है। क्षत्रिय के लिए धर्म है - क्षात्र धर्म। क्षात्रधर्म का जो रूप आज तक लोगों ने देखा है वह यह है कि राजा लोग क्षत्रिय होते थे जो बाहरी दुश्मनों से लड़ कर देश को बचाते थे और अपने यहां कोई असुर पैदा हो गया है, राक्षसी वृत्ति वाला पैदा हो गया है तो उसको दंड देकर समाज की रक्षा करते थे। लोकतंत्र में आज हम राजा नहीं हैं, हम इस लोकतंत्र का एक हिस्सा है लेकिन फिर भी क्या क्षत्रिय का कर्म खत्म हो गया? क्षत्रिय का कर्म है - क्षात्रधर्म। हमारे बीच परस्पर जो दूरियां बन रही हैं उनको दूर करना भी क्षत्रिय का ही कर्म है, यह भी क्षात्र धर्म है। हम आपस में स्वार्थ में उलझे पड़े हैं, एक दूसरे की टांग खींचने में लगे रहते हैं, उन सब बातों को खत्म कर-के हम एक परिवार के रूप में रह सकें यह भी क्षात्र धर्म है और यह जो सारे कार्यक्रम है वे सभी उस क्षात्र धर्म के निमित्त ही हैं। आप लोगों ने बहुत सारी बातें की, किसानों के बारे में बात की, मांगों के बारे में बातें की, हम एकजुट होकर के रहें इस पर भी जोर दिया और कहा कि श्री प्रताप फाउंडेशन यह करें। श्री प्रताप फाउंडेशन करने वाला नहीं है, हम करने वाले हैं। हम स्वयं ही करने वाले हैं इस बात को जब आप पक्का मान के चलेंगे और अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लेंगे तभी सफलता मिलेगी। श्री प्रताप फाउंडेशन ने तो आपको एक विचार दिया है उस विचार पर मंथन कीजिए और उस विचार से चलेंगे तो हमारे हित की बात होगी। जो मांगे आज की गई हैं उन मांगों को राज्य सरकार तक हम पहुंचाएंगे। बाड़मेर और जैसलमेर दोनों जिलों की जो मांगे हैं, कलेक्टर को भी दी जा रही हैं और उन्हें मुख्यमंत्री तक भी पहुंचाया जाएगा। आपकी जो राष्ट्रीय मरू उद्यान वाली मांग है उसकी भी केंद्र में चर्चा चल रही है, और लगता है अतिशीघ्र कुछ ना कुछ निर्णय होगा। जो इस प्रकार की समस्याएं हैं जहां हम भी कुछ कर सकते हैं हम अवश्य आपके साथ खड़े हैं लेकिन जब तक आप मिलकर एक साथ खड़े नहीं होते तब तक शक्ति आएगी नहीं और शक्ति के सामने ही सभी झुकते हैं। संघे शक्ति कलौयुगे - यह केवल कलयुग की बात नहीं है, हर युग में शक्ति का महत्व रहा है। उस शक्ति को पहचान कर हम सब एक होकर रहें, यही श्री प्रताप फाउंडेशन की इच्छा है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने किसान सम्मेलन के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ भारतीयता का पुजारी है। वह भारतीयता संपूर्ण समाज को, संपूर्ण राष्ट्र को एक परिवार मानती है लेकिन परायी संस्कृतियों के संपर्क के कारण हमारा वह पारिवारिक भाव सिमट गया है, वर्तमान राजनीति हमें बांटती है और आज हम खंड खंड हो गए है। संघ समाज में ऐसे विखंडन को सीमित करने वाले तत्वों को ढूंढ कर अपने आनुषंगिक संगठनों के माध्यम से उन पर काम करता है। किसान सम्मलेनों की श्रृंखला ऐसा ही प्रयास है। किसान शब्द इतना व्यापक है की इसमें भारत की 80 प्रतिशत आबादी समाहित हो जाती है लेकिन राजनैतिक दाव पेचों ने इस शब्द को भी सीमित कर दिया है। संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप फाउंडेशन का यह कार्यक्रम इस संकुचितता को मिटाकर इसकी व्यापकता के बल पर हम सब के सद्भाव को पुनर्स्थापित करने का काम कर रहा है। साथ ही किसानों के असंगठित स्वरुप के कारण हो रहे शोषण के बारे में हमें जागृत कर रहा है। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने मिट्टी परीक्षण का महत्व एवं उसकी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी।

मुस्लिम समुदाय के प्रतिनिधि नसीब खान ने कहा कि क्षत्रियों द्वारा संचालित राजतंत्र की व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि सारी प्रजा सुख से रहती थी, असुरक्षा का वातावरण नहीं था। जैसलमेर का इतिहास इसका साक्षी रहा है कि यहां के शासकों ने आमजन के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। मेघवाल समाज के प्रतिनिधि आत्माराम ने कहा कि क्षत्रियों ने हमेशा गरीब व शोषित वर्ग को अपने हृदय में स्थान दिया। क्षत्रियों का जहां गांव है वहां सभी जाति धर्म के लोग निश्चिंत होकर निवास करते हैं। चारण समाज प्रतिनिधि ऊगम दान द्वारा किसानों की मुख्य मांगो को मंच पर साझा किया गया। ब्राह्मण समाज प्रतिनिधि मुकेश गज्जा द्वारा श्री प्रताप फाउंडेशन की इस पहल की सराहना की गई। जिले के किसानों की मुख्य मांगो को लेकर ग्यारह सूत्री मांगपत्र का भंवर सिंह साधना द्वारा पठन किया गया। रावणा राजपुत समाज प्रतिनिधि आसू राम तेजमालता ने कहा कि यहां के शासक सदैव प्रजा के रक्षक रहे हैं। विदेशी ताकतों द्वारा फिल्मों व इतिहास के माध्यम से इनकी छवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया जो दुर्भाग्यपूर्ण है। एडवोकेट महेंद्र सैन, राणाराम सुथार, मनोहर सिंह भैरवा, चतुराराम प्रजापत, लाला राम चौधरी, जितेंद्र सिंह सिसोदिया, रावतमल सांवल, बाबू राम ओड, अर्जुन राम ओड एवं किशन गिरी गोस्वामी ने भी अपने विचार रखें। वीरम पुरी जी, रावल पुरी जी, पूर्व विधायक डॉ जितेंद्र सिंह, पूर्व विधायक सांग सिंह भादरिया, जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ़, पूर्व जिला प्रमुख अंजना मेघवाल, विक्रम सिंह नाचना, खेमेन्द्र सिंह जाम, पूर्व विधायक शैतान सिंह, जनक सिंह सत्तो, पूर्व विधायक छोटू सिंह, सुनीता भाटी, गुमाना राम सुथार, राणा राम सुथार, उम्मेद सिंह तंवर, कोजराज सिंह, सांकड़ा प्रधान भगवत सिंह, सम प्रधान तन सिंह, फहतेगढ़ प्रधान जनक सिंह, पूर्व प्रधान करूणा कंवर, हुकमाराम प्रजापत, हिम्मताराम चौधरी, नवल चौहान, मदनलाल सेन, भरत सिंह राजपुरोहित, लाखा राम भील सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के सम्भाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिंजनियाली के नेतृत्व में सहयोगियों ने कार्यक्रम की तैयारी के लिए जिले भर में संपर्क यात्राएं की एवं सघन रूप से प्रचार-प्रसार किया गया जिससे सर्वसमाज के लोगों की कार्यक्रम में उपस्थिति रही। कार्यक्रम के पश्चात जनप्रतिनिधियों द्वारा ग्यारह सूत्री मांग पत्र को जिला कलेक्टर को सौंपा गया।

धर्मेन्द्र सिंह काणेटी (द्वितीय) को पितृशोक

घनश्याम सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह काणेटी (द्वितीय) के पिताजी **घनश्याम सिंह जी** पुत्र श्री देशण सिंह का देहावसान 20 जुलाई 2022 को 70 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें और परिजनों को इस शोक की घड़ी में संबल प्रदान करें।

मगसिंह आंवलियासर का देहावसान

मगसिंह आंवलियासर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **मग सिंह आंवलियासर** का 19 जुलाई 2022 को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 4 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 6 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं 9 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सहित कुल 19 शिविर किए। 17 से 27 मई 1989 तक आबू पर्वत पर आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

भीखसिंह जी लोड़ता का देहावसान

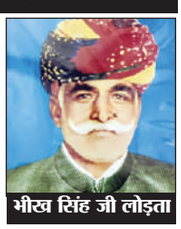
भीख सिंह जी लोड़ता

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **भीख सिंह जी लोड़ता** का दिनांक 14 जुलाई 2022 को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 73 शिविर किए जिनमें 21 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 22 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर, 23 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर, 5 विशेष शिविर एवं 2 दंपत्ति शिविर सम्मिलित हैं। 9 से 12 अक्टूबर 1954 तक जोधपुर में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें और परिजनों को इस शोक की घड़ी में संबल प्रदान करें।

माननीय संरक्षक श्री का उदयपुर प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 17 से 20 जुलाई तक उदयपुर प्रवास पर रहे। प्रवास के प्रथम दिन उदयपुर शहर में सेवारत समाज के अधिकारीगण से माननीय संरक्षक श्री शिष्टाचार भेंट हुई जिसमें सभी ने समाज के हित में मिलकर काम करने की बात कही। समाज की प्रतिभाओं को निखारने के लिए उदयपुर संभाग, जो एक शैक्षणिक हब के रूप में पहचान बना रहा है, में राजपूत छात्रावास के निर्माण पर भी चर्चा हुई एवं सभी ने उसके लिए यथासंभव सहयोग की बात कही। 19 जुलाई को उदयपुर में लगने वाली सामूहिक पारिवारिक शाखा के सहभागियों के साथ एक दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम रखा गया जिसमें माननीय संरक्षक श्री के साथ सभी उबेश्वर महादेव मंदिर पहुंचे एवं दर्शन करके संघ संबंधित चर्चा की। इसी दिन संरक्षक श्री के सान्निध्य में पारिवारिक स्नेहमिलन व स्नेहभोज कार्यक्रम रखा गया। इस दौरान उपस्थित स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं से अनौपचारिक चर्चा करते हुए माननीय संरक्षक श्री ने कहा कि बालिका शिविरों एवं दंपति शिविरों के प्रारंभ के बाद परिवारों के वातावरण में परिवर्तन आया है, आपसी दूरी कम हुई है। संघ के साथ चलना है तो अपने आप को बदलना पड़ेगा। स्वयं को बदलकर फिर स्वयं को अभिव्यक्त भी करना है। जब हमसे संघ ही अभिव्यक्त होने लगे तो इसका अर्थ है कि हमारे जीवन में संघ उतर आया है। उन्होंने कहा कि सामूहिक अभ्यास की प्रणाली में हमारे कई दोष और विकार स्वाभाविक रूप से दब जाते हैं किंतु केवल दमन खतरनाक है। दमन के साथ साथ शमन भी आवश्यक है अर्थात विकारों के दमन से जीवन में आए परिवर्तन को अनुभव करके यह समझ विकसित हो जाए कि यह रास्ता ही ठीक है और इसी पर चलने में मेरा हित है। संरक्षक श्री ने संभाग में होने वाले बालिका शिविरों के स्थान और व्यवस्था के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

मुंबई की तनेराज शाखा का एकदिवसीय भ्रमण

मुंबई प्रांत की तनेराज शाखा के स्वयंसेवकों का एक दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम 24 जुलाई को रखा गया। सभी स्वयंसेवक दो बसों के माध्यम से मुम्बई ओर पूना के बीच स्थित हिल स्टेशन लोनावला पहुँचे और स्नेहपूर्ण वातावरण में संघ चर्चा करते हुए यहां स्थित बुशी डैम के मनोरम प्राकृतिक दृश्य का आनंद लिया। भ्रमण के दौरान स्नेहभोज भी रखा गया। सहप्रांत प्रमुख देवी सिंह झलोड़ा सहित 90 स्वयंसेवक भ्रमण में सम्मिलित हुए।

बड़ली (अजमेर) में समारोह पूर्वक मनाई राव चंद्रसेन की जयंती

अजमेर जिले के गांव बड़ली में 21 जुलाई को राव चंद्रसेन की जयंती सुमेर निवास फार्म हाउस पर समारोह पूर्वक मनाई गई। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष शिव सिंह राठौड़, पुरातत्व एवं शोध संस्थान जोधपुर के महेंद्र सिंह तंवर, पूर्व राज्यसभा सांसद ओंकार सिंह लखावत, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी अजमेर वीरेंद्र सिंह राठौड़ आदि वक्ताओं ने राव चंद्रसेन को स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता के संघर्ष का प्रतीक बताते हुए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और उनका पैनोरमा बनाने की आवश्यकता जताई जिससे उनके जीवन चरित्र के बारे में समाज की युवा पीढ़ी जान सके और उनसे प्रेरणा ले सके। राव चंद्रसेन स्मृति संस्थान के संयोजक जय बहादुर सिंह बडली ने सभी का आभार जताया।

देवेंद्र सिंह बाज्यास ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अजमेर प्रांतप्रमुख विजय राज सिंह जालिया भी स्वयंसेवकों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं व्यवस्था में सहयोग किया। कार्यक्रम के दौरान संघ साहित्य भी समाज बंधुओं को उपलब्ध करवाया गया। जय बहादुर सिंह बड़ली के आग्रह पर अक्टूबर माह में इसी स्थान पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी निश्चित हुआ। कार्यक्रम के अंत में सहभोज भी रखा गया। वर्ष 2023 में राव चंद्रसेन की जयंती केकड़ी के बघेरा गढ़ में मनाने की घोषणा राव वीरभद्र सिंह द्वारा की गई।

जौहर स्मृति संस्थान की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी द्वारा पदभार ग्रहण

चित्तौड़गढ़ में जौहर स्मृति संस्थान की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने 22 जुलाई को कार्यभार ग्रहण किया। अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह विजयपुर, महामंत्री तेजपाल सिंह खोर, उपाध्यक्ष शक्ति सिंह मुरलिया, उपाध्यक्ष (महिला) निर्मला कंवर राठौड़, संयुक्त मंत्री गजराज सिंह बराड़ा, कोषाध्यक्ष गोवर्धन सिंह भाटी ने जौहर मंदिर पर व कार्यालय में भगवान एकलिंग नाथ की पूजा अर्चना कर दायित्व ग्रहण किया। इस अवसर पर समारोह का आयोजन भी किया गया जिसमें विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, फतेह सिंह देवड़ा उदयपुर, मेघ सिंह बरड़ोद, चंद्रवीर सिंह जगपुरा, चुनाव अधिकारी भैरो सिंह चौहान, भदेसर प्रधान सुशीला कंवर, चित्तौड़गढ़ प्रधान देवेंद्र कंवर, सीकेएसबी चेयरमैन लक्ष्मण सिंह खोर, नाहर सिंह मुरोली, लवदेव सिंह कुराबड, दिलीप सिंह बडलियास, निवर्तमान अध्यक्ष तख्त सिंह सोलंकी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org